# ।। श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन ।।

*रचियता – राजेश कासलीवाल, उज्जैन*

***(स्थापना)***

*(छंद - रोला)*

सम्यक रत्नत्रय धर भायी षोडश भावन ।
सर्व हितंकर पाया पद तीर्थंकर पावन ।
धर्म देशना धर्म चक्र का किया प्रवर्तन ।
हुआ अहो जयवंत जगत में श्री जिन शासन ।

*(दोहा)*

हृदय कमल पर आ तिष्ठो, पार्श्वनाथ जिनराज ।
अष्टद्रव्य मय अर्घ्य ले, आया पूजन काज ।

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्ननाननम् ।*

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।*

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् परि पुष्पांजलि क्षिपेत ।*

*(छंद मोतियादाम)*

सभी मल नाश परिणति के, किये दुख अंत चहुंगति के ।
हुए परिशुद्ध अहो तुम देव, करुं अतएव चरण की सेव ।
मिटे मम जन्म-मरण दुख नाथ, अनादि काल भ्रमण की गाथ ।
जिनेश्वर पार्श्व करुं गुणगान, चलूं तुम मार्ग लहूं शिवथान ।

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

निजातम भाव मलय की छांह, किया विभु नाश भवार्णव दाह ।
क्षमा के पुंज प्रभु हो आप, कषायिक भाव मुझे संताप ।
हरो भवताप शरण हूं नाथ, करुं अरदास मलय ले हाथ ।
जिनेश्वर पार्श्व करुं गुणगान, चलूं तुम मार्ग लहूं शिवथान ।

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।*

क्षणिक यह देह क्षणिक संयोग, क्षणिक परभाव अथिर उपयोग ।
तजे तुम देव विनश्वर भाव, धरा थिर योग निजात्म स्वभाव ।
अखंडित भाव अखय तुमसा, मिले जिनदेव विभाव नसा ।
जिनेश्वर पार्श्व करुं गुणगान, चलूं तुम मार्ग लहूं शिवथान ।

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।*

पर का लक्ष्य वैभाविक काम, व्यभिचारी यही परिणाम ।
महा दुख क्लेश सदा परमेश, अनादिकाल नही सुख लेश ।
प्रभुवर आप विजेता काम, चरण में पुष्प करो निष्काम ।
जिनेश्वर पार्श्व करुं गुणगान, चलूं तुम मार्ग लहूं शिवथान ।

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।*

प्रभु तुम पूर्ण प्रभु मैं पूर्ण, प्रभु तुम तृप्त हूं तृष्णापूर्ण ।
क्षुधा का रोग नही परभोग, मिले संयोग सभी सवियोग ।
सदा परचाह सदा परआश, विभो अविनाश करो यह नाश ।
जिनेश्वर पार्श्व करुं गुणगान, चलूं तुम मार्ग लहूं शिवथान ।

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

सकल जग ज्ञेय प्रभु तुम ज्ञान, रहो निजमाहि निजानन्द पान ।
नही तुम ज्ञान नही निज भान, रहा वश मोह महा अज्ञान ।
करो तम नाश करो भ्रम नाश, अहो सुखराश निजात्म प्रकाश ।
जिनेश्वर पार्श्व करुं गुणगान, चलूं तुम मार्ग लहूं शिवथान ।

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।*

पराश्रित भाव विभाव विकार, किये बहु दोष निजात्म बिसार ।
तुम्हे लख शुद्ध अदोष अबंध, लगी प्रिय चित्त चिदातम गंध ।
अतः ले गंध चरण तुम सेव, हरो सब दोष वरो गुण देव ।
जिनेश्वर पार्श्व करुं गुणगान, चलूं तुम मार्ग लहूं शिवथान ।

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।*

निजातम साध किया सुख सिद्ध, लिया फल मोक्ष महान प्रसिद्ध ।
तुम्हे आदर्श बना निजलीन, तजूं सब यत्न किये फलहीन ।
जजूं मैं देव लिये फल हाथ, सही पुरुषार्थ सफल हो नाथ ।
जिनेश्वर पार्श्व करुं गुणगान, चलूं तुम मार्ग लहूं शिवथान ।

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।*

मिटे दुख जन्म-मरण भवताप, मिले पद अक्षय क्षय-रतिपाप ।
न हो परचाह अज्ञान अंधेर, न कर्म विकार रहे प्रभु घेर ।
मिले फल मोक्ष निजातम साध, अतः ले अर्घ्य करें आराध ।
जिनेश्वर पार्श्व करुं गुणगान, चलूं तुम मार्ग लहूं शिवथान ।

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

## *पंचकल्याणक अर्घ्य*

*(छंद धत्तानंद)*

तीर्थंकर वंदें नित अभिनंदें, पद अरविंदे शीश धरें ।
पांचों कल्याणक समकित दायक, मोद बधायक भक्ति करें।

*पुष्पांजलि क्षिपेत्।*

*(छंद वसंततिलका)*

वैशाख कृष्ण द्वितीया उर-मात आए ।
वामा लखे सुपन षोडश हर्ष पाए ।
बरसे अपार शुभ रत्न नगर बनारस ।
हरसे अपार नर-नार सुगर्भ पारस ।

*ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।*

तिहुंलोक शांत क्षण को जब पार्श्व जन्मे ।
एकादशी सुकल पौष महा दिवस में ।
गिरि मेरु लाय सुरनाथ नव्हन कराया ।
बहु हर्ष सर्व जग में नही था समाया ।

*ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।*

बिन ब्याह यौवन चले वनवास लेने ।
वनवास क्या निज चिदानंद वास लेने ।
अनुमोद ब्रह्म ऋषि द्वादश भावना से ।
तिथि हो भले वह जनम की, राग नासे ।

*ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।*

तिथि चार चैत वदि घाति कर्म नाशे ।
निजात्मलीन रह सर्व जगत्प्रकाशे ।
विराज द्वादश सभा मधि तत्ववर्षा ।
गति तीन भव्य सुन अंतर भाव हर्षा ।

*ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।*

संसार देह सब संग संयोग तजकर ।
सम्मेद के सिखर स्वर्ण से सप्त उपर ।
सित सात सावन स्वाभाविक सिद्ध स्वामी ।
सदा सुखी सुफल सादि-नंत नामी ।

*ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।*

## *जयमाला*

*(दोहा)*

वंदन श्री पारस प्रभु, चरण-कमल नत भाल ।
भाव भक्ति हृदय धरुं, गाऊं गुण मणिमाल ॥

*(छंद त्रोटक)*

जय पार्श्व प्रभु विभु आनंदमय, जय वीतराग सुख ज्ञान निलय ।
जय मोह महारिपु नाश किया, जय अन्तर भेद प्रकाश किया ॥
जय शुद्धातम नित ध्यान धरो, जय निज आनन्द रस पान करो ।
जय ज्ञान अनन्त विशाल धरो, तिहुंलोक अलोक प्रकाश करो ॥

अरि काम कषाय हुए जितने, अरि सर्व विकार हने तुमने ।
ना एक विभाव क्षमा कीना, पर नाम क्षमामूरत लीना ॥
धरि कमठ बैर भव-भव अपार, तुम क्षमा भाव धर बार-बार ।
भव-भव उपसर्ग अपार सहे, भव-भव में समता चित्त लहे ॥

शठ कमठ बहु बल धारी था, भव-भव में अत्याचारी था ।
तुम क्षमाशील थे शांतभाव, सब गौण करे रे बैरभाव ॥
बल देह, देह ना अपनी थी, छल माया, माया दुख करनी थी ।
पर क्षमा आत्मबल सबल रहे, छल-क्रोध-बैर को प्रबल दहे ॥

तुम तीर्थ हुए वह कुतप ताप, तुम गृह में धर्मी वह तपित पाप ।
तुम सवंरमय मुनि धर्म लिए, वह संवर हो बहु कोप किए ॥
तुम निर्जर झड़ झड़ कर्म झड़े, बरसाए प्रस्तर बड़े बड़े ।
तुम ध्यान वन्हि में दोष दहे, वह शोले बन, बन नीर बहे ॥

बहु वात करे वह घात करे, तुम कर्म घातिया घात अरे ।
अरहंत हुए भगवंत हुए, गुणवंत हुए सुखनंत हुए ॥
यों क्षमा विजेता क्रोध हार, थर-थर कंपित कर विनयचार ।
प्रभु क्षमा करो प्रभु शरण गहो, पश्चातापित हूं चरण लहो ॥

प्रभु दिव्य ध्वनि में कहे देव, तज क्रोध बैर दुखकर कुटेव ।
है क्षमा आत्म का परम धर्म, हो क्षमाभाव से नष्ट कर्म ॥
कर नष्ट सभी रज योग प्रभु, तज तन अंतिम संयोग विभु ।
स्वर्णाभ धरा से शिखर लोक, रे आत्मशिखर सर्वान्त लोक ॥

*(छंद धत्तानंद)*

तीर्थंकर प्रभुवर हितकर दुखहर, भवतर शिवकर सुहित विभो।
तुमको नित ध्यावें तुम गुण गावें, शिवसुख पावें शीघ्र प्रभो ॥

*ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।*

*(दोहा)*

विधि संकट हर पार्श्व प्रभु, विधि कही शिवराह ।
धरुं क्षमा उर मुक्ति लहूं, और न किंचित् चाह ।

*पुष्पांजलि क्षिपेत्।*